Postal Registration No. G/CHD/0107/2012-14 RNI No. CHABIL/2000/3469

दीन बन्धु सर छोटूराम

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

जाट लहर

सत्यमेव जयते

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"k 14 vad 03 30 ekp] 2014 eY; 5 #i;s

प्रधान की कलम से

जन जन के नायक ताऊ देवी लाल

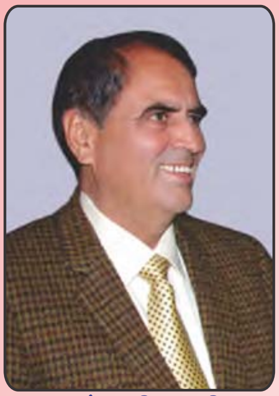

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

आज ताऊ देवीलाल की 13वीं पुण्य तिथि पर लेखक यह कहने पर मजबूर है कि जब-जब समाज में कुरीतियां, अंधकार, कुव्यवस्था का बोलबाला हुआ है तो समाज सुधारक युग युगांतर से सलाखों के पीछे से ही अवतरित हुए या सलाखों के पीछे डाल दिए गए। भगवान कृष्ण का जन्म सलाखों के पीछे बंदी बने माता-पिता से हुआ। ईसा मसीह को क्रूसीफई किया गया। श्रीमति इंदिरा गांधी के जुल्म सितम से त्राहि-त्राहि कर उठी जनता जेलों में बंद थी तो जन नायक चौ० देवीलाल के प्रयासों से जनता पार्टी का जन्म हुआ जिसने एक तानाशाह को धूल चटा दी। अब उनके सपूत चौ० औम प्रकाश चौटाला भी एक साजिश के शिकार होकर जेल में बंद हैं जो जल्द ही कुदंन बनकर निकलेगें। भारतीय जन मानस आज घोटालों की सरकार से आजिज आ चुकी है। चौ० देवीलाल के लिए जेल यात्रा एक धार्मिक यात्रा बन गई थी। 15 वर्ष की आयु से ही उन्होने जेल यात्रा का अनुभव हासिल कर लिया, जिससे उनका मनोबल टूटने की बजाए और मजबूर हो गया। वे सात बार जेल गए लेकिन किसान काश्तकार और कामगार के हकों के लिए अपना समस्त जीवन लगा दिया।

चौ० देवीलाल का जन्म 25 सितंबर 1919 को तेजाखेड़ा, जिला बठिंडा, अब सिरसा में हुआ। पिता श्री लेख राम सिहाग 2750 बीघे जमीन के मालिक सामंत प्रवृति के व्यक्ति थे लेकिन चौ० देवीलाल बचपन से ही एक समाज सुधारक के तौर पर उभरे। जोड़-तोड़ और छल कपट की राजनीति उन्होने कभी भी नहीं की और ना ही किसी पर तश्दद होने दिया। वे सत्ता में रहे या विपक्ष में सदा गरीब मजदूर मजलूम के हितों के लिए संघर्षरत रहे तभी वे ''ताऊ'' कहलाए। भारत की राजनीति में एकमात्र ताऊ चौ० देवीलाल ही कहलाए। हमारी संस्कृति में 'ताऊ' सबसे सम्मानित व्यक्ति रहा है। उनका जीवन सीधा साधा और सरल था लेकिन चिंतन उतना ही जटिल था। चौ० देवीलाल को कभी कोई जाति-पाति, धर्म, समुदाय, क्षेत्रीयता की हदें रोक ना पाई वे सदा गरीब, मजलूम और मजबूर के हकों के लिए लड़ते रहे।

सामंतवादी परिवार से तालुक रखने के बावजूद अपनी ही भूमि मुजारों को सहर्ष सौंप दी तथा 1953 में काश्तकारों के हितों में विधान सभा से बिल भी पारित करवा दिया।

संयुक्त पंजाब में हिंदी भाषी क्षेत्र के विकास की ओर ध्यान नहीं दिया जाता था और यहां के नागरिकों को भी उजड़ और फूहड़ माना जाता था। उन्होने संघर्ष किया ताकि अलग राज्य बन सके तथा यहां के नागरिकों को सम्मानपूर्वक जीवन यापन का हक मिल सके। पहली नवंबर 1966 को हरियाणा एक अलग राज्य के रूप में अस्तित्व में आया और इस क्षेत्र ने आशातीत विकास किया। जिसका श्रेय चौ० देवीलाल को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में जाता है। उन्हे मालूम था कि प्रशासनिक अधिकारी आम जनता से सीधे मुंह बात नहीं करते। चौधरी साहब ने 'प्रशासन आपके द्वार' शुरू करवाया ताकि जनता की समस्याएं उनके द्वार पर ही निपटाई जा सकें। उनका मानना था कि 'लोक राज- रोक लाज' से चलता है। वे खुद जन सेवक बने रहे। मुख्यमंत्री के तौर पर उनके घर पर एक 'हुक्का हाउस' स्थापित किया गया। यहां वे स्वंय उसमें शामिल होकर जनता से सीधा संवाद करते, उनकी दुख तकलीफें सुनते और उनका समाधान करते।

किसान के लिए उनका हृदय सदा धड़कता रहा। कर्ज, मर्ज और गर्ज से दबे किसान को उसके उत्पाद का उचित रेट-वेट-डेट मिले, के प्रबंध उन्होने किए। जैसा कि 'भ्रष्टाचार बंद, पानी का प्रबंध' किसान को उत्तम किस्म के बीज, खाद, दवा और तकनीक मिले और उसके उत्पाद का उचित दाम मिले। कृषि में किसान को लागत मुल्य से भी कम दाम मिलता है। भूमि में खाद अधिक डालने से और दवाईयों के फसली छिड़काव से भूमि में जहर का मादा बढ़ने लगा जिससे इंसान की सेहत पर कुप्रभाव पड़ने लगा। चौधरी साहब ने कीटनाशक रहित कृषि को बढ़ावा दिया। अब 35 लाख एकड़ से भी अधिक भूमि पर कीट नाशक रहित कृषि हो रही है। मित्र कीटों पर अध्यापन और अनुसंधान के वे संदेशवाहक रहे। चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविद्यालय के माध्यम से इस दिशा में अनुसंधान की प्रथा को बढ़ावा दिया और आज यह विश्वविद्यालय किसान विकास की ओर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

फसल विवधीकरण उन्ही की देन है। फव्वारा सिंचाई हेतू किसानों को सब्सिडी प्रदान की। किसानों के कर्जे माफकरना उन्ही की देन है। वर्ष 1966 में हरियाणा के पास अपने खाने लायक भी अनाज यानि केवल 25 लाख टन का अनाज उत्पादन होता था। आज किसान की मेहनत और चौ० देवीलाल का चिंतन काम आया और आज हरियाणा 135 लाख टन से भी अधिक अनाज पैदा कर अपनी जरूरतें पूरी कर दूसरे राज्यों को अनाज दे रहा है। आज प्रदेश के पास अन्न भंडारण की क्षमता नहीं है।

शेष पेज 2 पर

'k"k i`t&1

लाखों टन अनाज मौसम तथा कीट पतंग व चूहों की भेंट चढ़ जाता है लेकिन संवेदनहीन सरकार किसान को लागत मुल्य भी अदा ना करने पर आमदा है। विदेश में किसान बबूदगी हेतू समय-समय पर पग उठाए जाते हैं लेकिन हमारे यहां किसान की बर्बादी के नगमें गाए जाते हैं। आज किसान को नकली खाद, बीज, दवा मिल रहे हैं और कोई रसीद तक उसे नहीं दी जाती। फसलों पर दवाओं का असर नहीं होता। बीज का उचित अंकुरण नहीं होता लेकिन हुकमरान लूट-खसूट में मशगूल हैं। उन्हे इससे कोई लेना देना नहीं है।

अपने संघर्षशील जीवन में चौ0 देवीलाल हार-जीत का परवाह किए बिना निष्काम सेवा भाव से जनता का प्रतिनिधित्व करते रहे। वे सन् 1952, सन् 1959, सन् 1962 में तीन बार पंजाब विधान सभा के लिए निर्वाचित हुए तथा सन् 1956 में तत्कालीन संयुक्त पंजाब में मुख्य संसदीय सचिव भी रहे। उन्होने हरियाणा बनने से पूर्व आम आदमी को न्याय दिलाने के लिए संघर्ष किए। वे अपनी दूरदर्शी व पारदर्शी सोच के द्वारा हर प्रकार की समस्या का समाधान निकाल लेते थे। राष्ट्रहित में किसी भी राजनैतिक व सामाजिक मुद्दे पर वे अपने विरोधियों तक से भी सलाह मश्विरा करने में संकोच नहीं करते थे लेकिन आज के बदलते हुए स्वार्थी व जोड़तोड़ के राजनीतिक परिपेक्ष में सत्ता पक्ष के नेता व अन्य राजनीतिज्ञ सार्वजनिक हित के सामुहिक, सामाजिक व अन्य मुद्दों पर भी गंभीरता से विचार करने की बजाए अपने नीजि हितों की पूर्ति तथा अपना राजनैतिक स्वार्थ हल करने के लिए इन मुद्दों को ढाल बनाने में ज्यादा रूचि लेते हैं। यही कारण है कि आज समाज में अंतर्जातीय विवाह, सगोत्र विवाह व खाप पंचायतों के निर्णयों आदि से उत्पन्न विवादों के मामले तीव्र गति से बढ़ रहे हैं, जिससे समाज में अराजकता, अशांति का माहौल बनने के साथ-साथ ग्रामीण समाज में सदभावना व भाईचारे का माहौल खराब हो रहा है। इस प्रकार के सामाजिक मुद्दों पर अंकुश लगाने व स्थाई समाधान के लिए चौ0 देवीलाल जैसे जनप्रिय व दूरगामी सोच के एक छत्र नेता की आवश्यकता है जो कि अपनी सूझबूझ व विवेक से समाज के विभिन्न वर्गों के साथ परंस्पर बातचीत द्वारा इस प्रकार के मुद्दों का समाधान कर सके।

उनका मानना था कि गांवों के विकास के बिना राष्ट्र तरक्की नहीं कर सकता क्योंकि शहरों की समृद्धि का मार्ग गांवों से होकर गुजरता है। इसलिए अपने शासनकाल में ग्रामीण मजदूर व काश्तकारों के साथ अन्याय नहीं होने दिया परंतु विडंबना है कि आज की सत्तासीन राज्य व केंद्रीय सरकार की गरीब-मजदूर व किसान विरोधी नीतियों के कारण इस वर्ग की हालत काफी दयनीय हो गई है जिसकी किसी भी राजनेता तथा प्रशासन को सुध लेने की फुरसत नहीं है।

पुलिस प्रशासन को चुस्त-दुरूस्त करने हेतू पुलिस कर्मियों के लिए उन्हे समयबद्ध तरक्की देना, पूरे राज्य में खेलों को बढ़ावा देने के साथ-साथ पुलिस विभाग के खिलाड़ियों को भी खेल जगत में अव्वल प्रदर्शन करने पर विशेष तरक्की देना व निरीक्षक के पद तक खिलाड़ी कोटे से 3 प्रतिशत विशेष भर्ती करने का प्रावधान आदि अनेकों कल्याणकारी योजनाएं शुरू की। कुश्ती जैसे परंपरागत खेल को पूरे राष्ट्र में सर्वप्रथम वर्ष 1988 में राज्य खेल घोषित किया और पुलिस में कार्यरत सिपाही (पहलवान) राजेन्द्र सिंह को वर्ष 1978 में बैंकाक में हुए कामन्वैल्थ खेलों में स्वर्ण पदक जीतने पर सीधा पुलिस निरीक्षक पदौन्नत कर दिया जो आज आई पी एस अधिकारी है। अत: वास्तव में प्रदेश में खेलों के विकास की परंपरा जन नायक चौधरी देवीलाल ने शुरू की थी।

चौ0 देवीलाल ने अपने शासनकाल में सबसे पहले गरीब-मजदूरों, छोटे दुकानदारों व काश्तकारों के व्यावसायिक व कृषि ऋण माफ करके समाज के सभी वर्गों को राहत पहुंचाने का कार्यक्रम शुरू किया। इसके अतिरिक्त उन्होने काश्तकारों व छोटे दुकानदारों को बैंकों से सस्ते ब्याज पर ऋण उपलब्ध करवाने व कृषि के लिए बिजली, पानी, उत्तम बीजों, उर्वरकों को प्रचुर मात्रा में उपलब्ध करवाने तथा प्राकृतिक प्रकोपों से फसल नष्ट होने पर किसानों व काश्तकारों को उचित मुआवजा दिलवाने की व्यवस्था करके कृषि व इससे संबंधित कार्यों पर आधारित लगभग 80 प्रशित ग्रामीण जन संख्या के जीवन स्तर को सुधारने का प्रयास किया। किसान के खेत के चारों तरफ सामाजिक वानिकी के वे कर्णधार थे ताकि किसान की फसल का नुकसान भी ना हो और वृक्षों से अतिरिक्त आय भी हो सके बल्कि किसान के खेत के साथ लगे सरकारी वृक्षों से छाया की वजह से किसान को हो रहे नुकसान की भरपाई के लिए उन्होने वृक्ष की आमदन में आधा हिस्सा किसान को दिलवाया था।

वास्तव में चौ0 देवीलाल एक ऐसी शख्सीयत थे जिन्होनें किसान व गरीब वर्ग की अवस्था को बहुत करीब से देखा है। किसी भी प्रकार की प्राकृतिक व राष्ट्रीय आपदा के दौरान वे स्वंय जनता जनार्धन के बीच पहुंचकर उनके दुखों को बांटते थे। वर्ष 1977-79 के दौरान आई बाढ़ में ग्रामीण जनता व बाढ़ पीड़ितों की रक्षा के लिए प्रदेश का मुख्यमंत्री होते हुए स्वंय बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों में जाकर सिर पर मिट्टी का टोकरा उठाकर जनता को अपनी रक्षा करने के लिए प्रेरित किया। सन् 1978 में पहली बार ओलावृष्टि से बर्बाद हुई किसान की फसल का 400 रूपये प्रति एकड़ की दर से मुआवजा देकर काश्तकार व इससे जुड़े वर्गों को राहत पहुंचाने का कार्य शुरू किया लेकिन आज किसान व गरीब वर्ग की समस्याओं के प्रति राज्य सरकारों व केंद्रीय सरकार के उदासीन रवैये के कारण यह वर्ग बर्बादी के कगार पर है। प्रदेश में प्रतिवर्ष बाढ़ व अन्य प्राकृतिक प्रकोपों से लाखों एकड़ फसल तथा सैंकड़ों व्यक्तियों के घर नष्ट हो जाते हैं लेकिन सरकार द्वारा अभी तक कोई कारगर उपाय नहीं किए गए हैं। इसलिए आज चौ0 देवीलाल जैसी शख्सीयत की अत्यंत आवश्यकता है जो जनता की समस्याओं को समझते हुए व्यक्तिगत तौर से रूचि लेकर उनके समाधान के लिए सुचारू कार्यक्रम निर्धारित कर सके।

चौ0 देवीलाल का राजनैतिक जीवन एक खुली किताब की तरह पारदर्शी रहा है। उन्हे जोड़-तोड़ की राजनीति से सख्त नफरत थी। उनका मानना था कि राजनीति में भ्रष्टाचार एक विष की तरह है जिससे

सीधे रास्ते पर चलने वाला व्यक्ति कभी भटका नहीं करता। - नीति वचन

जनमानस की आकांक्षाओं का हनन होता है और लोकतत्र पर प्रहार होता है। इसलिए साऊ-सुथरे व कुशल प्रशासन से ही सुदृढ़ प्रजातंत्र का मार्ग प्रस्त हो सकता है। अपनी ईमानदारी एवं निर्भिकता के वे कारण बड़े से बड़े राजनेताओं का विरोध करने से भी नहीं हिचकिचाए और जनमानस के प्रतिनिधि के तौर पर सशक्त भूमिका निभाते रहे। उनका मानना था कि जब तक हमारी संसद एवं विधानसभा में सिद्धांतवादी, कर्त्तव्यनिष्ठ, निर्भिक, निर्लोभी व समर्पित व्यक्तित्व नहीं प्रवेश करेगें तब तक संसद की संपूर्ण कार्यवाही कुछ व्यक्तियों तक ही सीमित रहेगी और लोकतंत्र के स्थान पर निरंकुशता बढ़ती रहेगी। वे जनता के मन से डर निकालकर उन्हे अपने अधिकारों व हितों के प्रति जागरूक करना चाहते थे।

चौ0 देवीलाल एक महान त्यागी व तपस्वी व्यक्तित्व के धनी थे। इसका जीता जागता उदाहरण यह है कि एक प्रभावशाली, कुशल राजनीतिज्ञ तथा सफल नेतृत्व के धनी होते हुए भी उन्होने दो बार अपने सिर से प्रधानमंत्री का ताज उतार दिया और स्वंय इसी ताज को श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह व चंद्रशेखर के सिर पर रख दिया। उनके इस महान त्याग की भावना से आज उनके विरोधी भी मात खा रहे हैं। ऐसा उदाहरण भारतवर्ष के इतिहास में शायद ही देखने को मिलेगा। वे राजनीति को लोकतंत्र का प्रहरी मानते थे जिन्हे जन साधारण व देश के दिशा-निर्देशों की पालना करनी चाहिए। वे हमेशा ऐसी व्यवस्था के पक्षधर रहे हैं जो कि शोषित व पीड़ित वर्ग को अपनी अस्तित्व की लड़ाई लड़ने के लिए प्रेरित करती रहे। चौ0 देवीलाल ने सदैव राजनेताओं के लिए लोकलाज के आदर्श पर आचार संहिता स्थापित करने पर बल दिया ताकि राजनीति में अनैतिकता को रोका जा सके। वे हमेशा कहते थे ''मैं कभी भी सज़ा के पीछे नहीं भागा ज्योंकि मैं हमेशा ऐसे लोगों के साथ रहा हूं जो सज़ा से बाहर रहकर भी अपनी न्यायोचित मांगों के लिए संघर्षरत रहे हैं।'' इसीलिए ताऊ देवीलाल ने सतलुज यमुना लिंक नहर के मुद्दे पर 14-08-1985 को 7 अन्य विधायकों के साथ विधानसभा से इस्तिफा दे दिया और 1987 में पुनः चुने गए।

चौ0 देवीलाल ने जब भी महसूस किया कि हरियाणा की जनता के साथ अन्याय हो रहा है तो सज़ा पक्ष के नेताओं का डटकर विरोध करते और जन साधारण के हितों की रक्षा हेतू जनता के बीच जाकर जन संघर्ष करते। आपातकाल के दौरान भी हरियाणा के इस महान नेता को 19 मास तक नजरबंद रखा गया। आपातकाल की समाप्ती के बाद सन् 1977 में चौ0साहब फिर जनता के बीच आए और सारे भारत का भ्रमण करते हुए विभिन्न राजनैतिक पार्टियों को एक मंच पर इकट्ठा करके तत्कालीन केंद्रीय सरकार की किसान व मजदूर विरोधी नीतियों का पर्दाफास करके केंद्रीय स्तर पर जनता पार्टी की सरकार का गठन करवाने में कामयाब हुए। उज़र प्रदेश, राजस्थान, उड़ीसा तथा बिहार में किसान हितैषी मुज़्यमंत्रियों को स्थापित करवाया।

चौ0 देवीलाल सन् 1987 में हरियाणा के पुनः मुज़्यमंत्री बने और मुज़्य मंत्री का पद संभालते ही उन्होनें अधिकारी वर्ग व चहेते राजनीतिज्ञों को स्वैच्छिक कोटे के तहत आंबटित किए जाने वाले हुड्डा के प्लाटों की सूचि को रद्द कर दिया। चौधरी साहब की यह कार्यवाही लोकतांत्रिक प्रणाली को सुदृढ़ करने तथा प्रशासन में राजनैतिक दखल अंदाजी समाप्त करने का एक अह्म प्रयास था। उनकी सरकार जनता की सरकार थी और उनकी राज्य प्रशासनिक व्यवस्था सरल, दक्ष, व्यवहारिक तथा पारदर्शी रही है। समाज के गरीब व शोषित वर्ग के उत्थान व कल्याण हेतू वृद्धावस्था पैंशन, विधवा पैंशन, काम के बदले अनाज योजना, घुमंतू परिवारों के बच्चों के लिए एक रूपया प्रति दिन, बेरोजगार नवयुवकों को साक्षात्कार के लिए जाने हेतू मुफ्त यात्रा सुविधा, गांव-गांव में हरीजन चौपाल, हरीजन व गरीब महिलाओं के लिए जच्चा-बच्चा योजना, काश्तकार के खेत के साथ लगते सरकारी वृक्षों में जमींदार का आधा हिस्सा दिलाने, किसान-मजदूरों व छोटे दुकानदारों को ऋण माफी दिलाना आदि महत्वपूर्ण समाज कल्याण योजनाएं लागू की जिनको आज सारे राष्ट्र में अनुशरण हो रहा है। इन योजनाओं को आज के संघर्षपूर्ण जीवन में अधिक प्रभावी व सुचारू रूप से जारी रखने की नितांत आवश्यकता है अन्यथा ग्रामीण, मजदूर व किसान वर्ग का विकास संभव न होगा।

आज आवश्यकता है कि ताऊ देवीलाल की नीतियों व सिद्धांतों का अनुशरण किया जाए। इससे सरकारी नीति व कार्यशैली निर्धारण में मदद मिलेगी। चौधरी साहब की जन कल्याणकारी योजनाओं व निश्छल राजनीति से प्रेरणा लेकर प्रशासनिक व राजनैतिक तंत्र की विचारधारा को बदलने की नितांत आवश्यकता है ताकि ग्रामीण गरीब-मजदूर व किसान वर्ग के कल्याण व उत्थान के साथ-साथ स्वच्छ प्रशासन के लिए मार्ग प्रशस्त हो सके। वास्तव में ताऊ देवीलाल गरीब व असहाय समाज की आवाज को बुलंद करने वाले एक सशक्त प्रवक्ता थे इसलिए आज जन साधारण विशेषकर ग्रामीण गरीब-मजदूर, कामगार व छोटे काश्तकारों को अपने अधिकारों व हितों के प्रति जागरूक करने की आवश्कता है ताकि दलगत राजनीतिज्ञ व संबंधित प्रशासन इनके हितों की अनदेखी न कर सकें तभी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का एक स्वावलंबी व स्वस्थ ग्रामीण समाज का सपना पूरा किया जा सकता है। किसान, कामगार, काश्तकार का दर्द सीने में समेटे हुए धरती पुत्र एवं जगत ताऊ 6 अप्रैल 2001 को इसी मातृ भूमि में विलीन हो गए। अतः एक उदार हृदय एवं महान आत्मा - ताऊ देवीलाल को लेखक सदैव नत मस्तक होकर प्रणाम करता रहेगा।

लेखक 1977 से 1979, 1987 से 1989 तथा अगस्त-सितंबर 1999 से 2001 तक चौधरी साहब के नजदीकी प्रशासनिक अधिकारी तथा पुलिस प्रमुख (गुप्तचार विभाग) रहे हैं।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0(सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं
राज्य चौकसी ज्यूरौ प्रमुख, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ एवं
अखिल भारतीय शहीद सज़्मान संघर्ष समिति

शहीदों को सजदा

लेखक अखिल भारतीय शहीद सज़्मान संघर्ष समिति व जाट सभा चंडीगढ़ की ओर से 23 मार्च को शहीदी दिवस पर अमर शहीदों को भावभीनी श्रद्धाजंली अर्पित करते हुए दंड मस्तक होकर बार-बार प्रणाम करता है।

हर मंदिर, मुस्जिद, गुरूद्वारे और गिरजाघर में जनता दीपक एक पावन ज्योति ही कहलाता है। यही ज्योति प्रचंड रूप धारण कर लेती है तो सब कुछ भस्म हो जाता है। देश प्रेम की पावन ज्योति भीषण अग्रिकांडों से अधिक ताकतवर होती है। अंग्रेज भारत में व्यापारी बनकर इस्ट इंडिया कंपनी के रूप में आए लेकिन उन्होने समाज की फूट और छोटे-छोटे रजवाड़ों की अपनी अपनी महत्वकांक्षा को समझा और उन्हे आपस में लड़ा कर भारत पर काबिज हो बैठे। स्वतंत्रता संग्राम का अंकुर 1857 में ही फूट गया जिसमें उस समय के आजादी के परवानों ने रण में पीठ नहीं दिखाई और अंतत: 1947 में सांप्रदायिक देश प्रेम की भावना ने अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया लेकिन जाते-जाते भी अंग्रेज अपनी आदत से मजबूर भारत के दो टुकड़े कर गए और कट्टरपंथी पाकिस्तान बनाने में कामयाब हो गए। भारत में आज भी पाकिस्तान से अधिक मुस्लिम समुदाय के लो÷ हैं तथा आमजन एक दूसरें को मिलने के लिए लालायित हैं।

स्वतंत्रता संग्राम के 90 वर्षों के इतिहास ने भारतीय जन मानस की वीरता, सहनशीलता और कुछ भी कर गुजरने की क्षमता कण-कण में देखी। राजे महाराजों ने तज़्त त्याग दिए, फांसी पर चढ़ गए। शहीद उद्यम सिंह जलियांवाला बाग का बदला लेने इंग्लैंड तक पहुंच कर भी अग्रेजों को ललकार आया और आकाश गूंज उठा, ''मझे पकड़ों लंदन वासियों में खड़ा पुकारूं'' और उस आतताई जनरल उडवायर को सदा की नींद सुला दिया। झांसी की रानी, राजा नाहर सिंह, राव तुला राम और नबाब झगार ने अपने तज़्ते ताज को तिलांजलि देकर अंग्रेजों को ललकार दिया। शहीदे आजम भगत सिंह ने अलीगढ़ रोड़ दिल्ली पर स्थित अंग्रेज एसैंबली में बंब फैंक कर इंकलाब जिंदाबाद का नारा लगाया। नेता जी सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज खड़ी कर ''तुम मुझे खून दो, मैं तुज़्हे आजादी दूंगा'' से जन मानस में नया खून संचरित कर दिया। मंगल पांडे ने अंग्रेज की फौज में रहते ही अंग्रेजों के विरूद्ध क्रांति का बीज बो दिया। ऐसे अनेकों उदाहरण हमारे इतिहास में भरे पड़े हैं।

घोटालों की प्रयायवाची सरकार शहीदी पर भी राजनीति करने से बाज नहीं आती और अपना कर्ज़व्य भूल बैठी है। आज भी शहीदों का बलिदान पुकार रहा है ''हम लाए हैं तुफान से किश्ती निकाल के, इसे रखना मेरे बच्चों संभाल के'' लेकिन हुज़्मरानों को सुरक्षा सेवा में भी घोटालों से फुरसत नहीं है। शहीदों को सज़्मान दूर की बात, हुज़्मरान तो भूल जाते हैं कि लोकतंत्र में जनता जनार्दन सर्वोपरि है। मतपेटी में बहुत कुछ छुपा है। जनता अगर खून देने में पीछे नहीं हटती तो मतदान में आतताईयों को धूल चटाने में भी संकोच नहीं करती। भारतीय जनता की सहनशीलता का कोई अंत नहीं लेकिन जब ठान लिया तो फिर फतह करके ही छोड़ते हैं। कहते हैं पहले हम छेड़ते नहीं, अगर कोई छेड़े तो छोड़ते नहीं।

मार्च का महिना अंग्रेजों के लिए सदा ही सबक देने वाला रहा है। मौसम की वजह से वे इसे 'मैड मार्च' मानते हैं तो शहीद उद्यम सिंह द्वारा लिया गया बदला 11 मार्च को हुआ। शहीदे आजम भगत सिंह की शहादत 23 मार्च को हुई। लाला लाजपत राय का असहयोग, महात्मा गांधी की दांडी यात्रा सदा अंग्रेजों के कफन के कील बनते रहे।

आज आदर्श हाउसिंग घोटाला, राशन घोटाला, लद्दाख में सड़क घोटाला, ट्रैटा ट्रक घोटाला, बोफोर्स घोटाला, अगस्ता लैंड हैलीकाप्टर घोटाला अनेकों घोटालो तो नित नए सूरज के साथ उजागर हो रहे हैं लेकिन 1857 से आज तक के वीरों की गाथाएं संजोने में किसी को फुरसत नहीं है। आजादी के बाद भी 1961, 1965, 1971 तथा कारगिल युद्ध मैदानों में भारतीय सिपाहियों ने अपना फर्ज निभाया। वे रण में खेत हो गए लेकिन हिमालय का सिर कभी झुकने नहीं दिया। सियासतदानों ने उनकी भी कद्र न जानी और उनके मां बाप आश्रितों को दर-दर की ठोकरें खाने को मजबूर होना पड़ रहा है। लेकिन वास्तविकता में ज़्या हो रहा है, घोटालों का एक भवन निर्माण होगा, यहां किसी वतन प्रस्त को ना कोई निशां होगा।

आजादी के 66 वर्ष बाद भी अंग्रेज आतताईयों के नाम सड़कें, भवन, स्मारक, गेट तथा द्वीपों के नाम हैं। सरफरोशों-वतन परस्तों का कोईं नाम लेवा नहीं है। मंगल पांडे का इतिहास नगण्य है। शहीद भगत सिंह के नाम से राजनीति कर शहीद की माता विद्यावति को पंजाब माता का खिताब देकर ज्ञानी जैल सिंह सर्वोच्च पद तक पहुंच गए लेकिन उनके वारिसों को पंजाब में रहने के लिए स्थान भी नहीं है। उनके छोटे भाई कुलबीर सिंह के नाम सड़क फरीदाबाद में है उसी पर छोटे से घर में उनके बच्चे रह रहे हैं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि श्रीमति कुलबीर का देहांत हुआ उनका नाम श्रीमति संतोष था। बेटे बाबर सिंह दभगत सिंह के भतीजेट्ट ने पारिवारिक मित्र ट्रिज़्यून के संपादक प्रेम भाटिया जी को एक सूचना देते हुए लिखा कि श्रीमति संतोष संधु का देहात हो गया है और अखंड पाठ का भोग होगा। श्री प्रेम भाटिया ने उन्हे उतर ट्रिज़्यून के माध्यम से संपादीकीय में दिया कि उन्हे ताजुब हुआ कि भगत सिंह संधु थे वे राष्ट्र प्रहरी थे, राष्ट्र के लिए जीए और

मरे, उन्हे आपने जाति विशेष से बांध दिया। वे मानव ये उन्हे मानव ही रहने दो - मतलब ऐसे थे हमारे क्रांतिकारी। हमारा इतिहास अंग्रेजों ने लिखवाया जिसमें भारतीय स्वतंत्रता संग्रामियों को आंतकवादी लिखा गया जो आतंकी नहीं राष्ट्र के स्वतंत्रता संग्रामी थे। जो राष्ट्र अपने शहीदों का सज़्मान नहीं करता वह कभी पगति नहीं सकता। आज से ृ हजार वर्ष पूर्व चंद्रगुप्त मौर्य के सलाहकार कोटिल्य ने कहा था कि अपने सिपाहियों की फ्रिक करों उनके परिवारों के कल्याण की योजनाएं बनाओ आपकी सरहदों को गर्म हवा भी छू ना पाएगी।

विडंबना यह है कि केंद्रीय और राज्य सरकारें आतंकियों पर प्यार न्यौछावर कर रही है और ड्युटी कर रहे सिपाहियों की अनदेखी हो रही है। आतंकी राष्ट्र भक्तों को मार रहे हैं लेकिन जज़्मू काश्मीर में पाकिस्तानी निंत कार्यवाहियां कर रहे हैं। कैप्टन भाना सिंह जैसे के नाम पाकिस्तानी से जीती चौकी तक का नाम है लेकिन प्रदेश सरकार से ठेंगा। ऐसे में फौज का मनोबल कैसे बना रहेगा। आज 20 हजार फौजी अधिकारियों की कमी है, जिज़्मेवार कौन है, जिसे केवल अपनी गद्दी की फ्रिक है, रणबांकुरों की नहीं।

देश की स्वतंत्रता के लिए हुए पहले प्रयास को देश के लो÷ प्रथम स्वतंत्रता क्रांति के नाम से जानते हैं। 1857 में ये पहला प्रयास अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ देश के कई कौनो में बड़े पैमाने पर हुआ और इसमें राजे-रजवाड़े, नवाब और तत्कालीन रियासतों के राजा ही नहीं बल्कि स्थानीय प्रजा ने भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया था। इसकी खास बात ये मानी जाती है कि ये पहला मौका था कि फिरंगी फौज में अपनी सेवायें दे रहे हिंदुस्तानी सिपाहियों ने गौरों के खिलाफ बंदुक उठाई थी। राष्ट्र भर में फैली आजादी की इस चिंगारी में बड़े योद्धाओं, राजाओं, नवाबों के अलावा जिन शूरवीरों ने आगे बढ़ कर मातृ भूमि को आजाद कराने की इस मुहिम में सक्रिय हिस्सेदारी निभाई उनमें हरियाणा के हर हिस्से के शूरवीरों के नाम शामिल हैं। गांवों की चौपालों पर, स्थानीय लोकगाथाओं में और जिला स्तर पर संकलित गजेटियर में इसका विस्तार से वर्णन मौजूद है। ये दुखद पहलू है कि इन स्थानीय शूरवीरों को भूलाते हुए चंद लोगों को ही महिमामंडित किया गया।

हरियाणा जो कि तब महा-पंजाब का हिस्सा था ने देश की आजादी की पहली जंग में खूब जौहर दिखाये थे। हर समुदाय-जाति ने इसमें बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। बगभगढ़ के तत्कालीन राजा नाहर सिंह भी अग्रेजों के खिलाफ इस लड़ाई में कूद पड़े। अंतिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर की अगुवाई वाली इस पहली क्रांति की लड़ाई में उन्होंने उनका अंतिम क्षण तक साथ निभाया। बादशाह की मदद करते हुए राजा नाहर सिंह ने दिल्ली की गद्दी पर उन्हें विराजमान करा दिया था। तीन महीने तक ये कज़्जा बना रहा। जब देश में अलग-अलग स्थित अंग्रेजी फौजी छावनियों में मौजूद फौज के दिलों में ईस्ट इंडिया कंपनी के विरूद्ध रोष पनप रहा था तो राजा नाहर सिंह ने बिठुर (कानपुर) के पेशवा नाना साहेब, उनके निकट सहयोगी तांत्या टोपे आदि को साथ लेकर मथुरा के स्वामी बीरजा नंद, स्वामी दयानदं, स्वामी पूर्णानंद, मुस्लिम फकीरों और ग्रामीण समाज में बेहद सज़्मानित मानी जाने वाली सर्व खाप पंचायतों के नुमाइंदों के साथ अंग्रेजी शासन के विरूद्ध एक जुटता बनाने के लिए बैठक की और उन्हें आगे की कार्रवाई में सक्रिय सहयोग के लिए राजी किया। अंग्रेजों को इसकी भनक लग चुकी थी। लिहाजा राजा नाहर सिंह को गिरफतार कर लिया गया और 9 जनवरी 1858 को दिल्ली के चांदनी चौक की कोतवाली के सामने सरेआम फांसी दे दी गई। उनके साथ-साथ अंग्रेजी हकुमत के खिलाफ मुहिम में सहयोग करने वाले उनके साथी गुलाब सिंह, कुशाल सिंह और जोरा सिंह को भी फांसी पर लटका दिया गया। हरियाणा का देश की आजादी में न भूलाने वाला योगदान है। अहीरवाल में राव तुला राम का संघर्ष अंग्रेजों के खिलाफ किया गया कड़ा संघर्ष था। 17 मई 1857 को राव तुला राम ने अपने 500 साथियों को संग ले कर रेवाड़ी को अंग्रेजों से मुक्त कराते हुए वहां विजय पताका फहराई। उन्होंने वहां तैनात गौरी सरकार के तहसीलदार और थानेदार को हटा दिया और अंग्रेजी हकुमत के खजाने से 8 लाख 36 हजार 427 रुपये लूट लिये। रेवाड़ी के भौरा, शाहजहांपुर में मौजूद सरकारी मकानों पर अधिकार कर लिया। इनके तहत करीब 411 गांव शामिल थे। आजादी में हरियाणा के वर्तमान झज्जर के नवाब अज़्दुर रहमान खान को अग्रेजों के खिलाफ आजादी की जंग में हिस्सा लेने की कीमत अपनी जान दे कर चुकानी पड़ी। उन्हें 23 दिसंबर 1857 को लाल किला के सामने फांसी दे दी गई। हांसी के लाला हुज़्मचंद जैन और मुनीर बेग के बलिदान के किस्से आज भी स्थानीय लोगों की जुबान पर हैं। लाल हुज़्म चंद जैन जोकि कानूनगो थे ने बादशाह बहादुरशाह जफर को एक पत्र लिखा। ये पत्र 5 नवंबर 1857 को सांडरस के हाथ लग गया। इसके कारण लाला हुज़्म चंद जैन और उनके सहयोगी मुनीर बेग को हांसी में उनके घर के सामने सार्वजनिक तौर पर फांसी दे दी। अंग्रेजी हुकूमत ने न केवल उनकी घर जला दिये बल्कि जैन को दफनाया गया और मुनीर बेग को उसके घर के सामने जलाते हुए उनके धर्म के विरूद्ध इन क्रांतिकारियों की लाशों के साथ ज़ी बेहद क्रूर व्यवहार किया।

रणबांकुरों की गाथायें यहीं समाप्त नहीं होती। राजा नाहर सिंह की पत्नी के भाई चौधरी मोहन सिंह 10 मई 1857 को अंबाला के यौद्धाओं की एक टुकड़ी के साथ दिल्ली पहुंचे थे। इस टुकडी ने राजा की सेना के साथ मिल कर पलवल, होडल तथा फतेहपुर के इलाके वापिस लेने में सफलता हासिल करते हुए दिल्ली के बादशाह बहादुरशाह जफर की मदद की। अंग्रेजी शासन ने मोहन सिंह को बादशाह की मदद करने, उन्हें गोलाबारुद मुहैया कराने और अं÷जी

हुकूमत के खिलाफ ब÷ावत के आरोप में 1857 में फांसी चढ़ा दिया। हरियाणा के सोनीपत से बड़ी संज़्या में लोगों को जिन में औरतें, बच्चे और बुजूर्ग शामिल थे को अग्रेजों ने पकड़ कर मार दिया। कुंडली के नजदीक लिबासपुर के नंबरदार उदमी राम ने गांव के 25 लोगों के साथ शेरशाह सूरी मार्ग पर नाका लगा कर दिल्ली जाने वाले सामान को रोक लिया। उन्होंने अंग्रेजी सिपाहियों को बंदी बनाया, जिन्हें बाद में बैलों की तरह खेतों में ले जा कर हल में जोता गया। किसान सुरजा राम और उनके बेटे जवाहर सिंह और बाजे राम ने गांव वासियों के साथ मिल कर अंग्रेजों के सामान को रोका। गौरी हुकूमत ने इसे बगावत करार देते हुए उन्हें बीस साल के लिए काले पानी की जेल भेज दिया। उधर लिबासपुर के चौ. उदमीराम और अन्य पांच सदस्यों और शामरी के पांच नंबरदारों को पेड़ों के साथ बांध कर अंग्रेजों ने कीलें गाड़ कर बेरहमी से इन देशभक्तों को मार डाला और क्षेत्र के 51 परिवारों की इन देश भक्तों की सारी जमीन बांट दी गई। रोहतक का नाम आजादी के लिए हुई 1857 की पहली क्रांति में उसके योगदान के चलते सुनहरे अक्षरों में लिखा जाना चाहिए। उपलज़्ध रिकॉर्ड, स्थानीय कथाओं और सुबूतों से ये स्थापित होता है कि रोहतक ने बेहद बहादुरी का प्रदर्शन देश के लिए हुई इस पहली क्रांति की जंग में पूरी सक्रियता से किया। झज्जर, बहादुरगढ़ के नवाब अबदुर रहमान खान भी इसमें बहादुरी से लड़े। हालांकि अंग्रेजों ने इन गतिविधियों को काबू करने के लिए जींद के राजा की तब मदद ली। बावजूद इसके इस व्रिदोह को दबाने के लिए वहां भेजा फिरंगी ओहदेदार सर एच. बेनार्ड हमला करने का साहस न कर सका। उधर दिल्ली में हारने की खबर से रोहतक और आस पास के गांवों के जाटों में बेहद गुस्सा था, वो बेहद भड़के हुए थे। जाट समुदाय ने तब फैसला लिया और अंग्रेजों से अपने हर तरह के तागुक तोड़ने का ऐलान कर दिया। खरखौदा से बीरासत अली और रोहतक से बाबरखान की रहनुमाई में सब एक हो चुके थे। बीरासत अली ने अंग्रेजों से अपने पूरे इलाके को आजाद करा लिया। हालांकि वे रोहतक के जिला मुज़्यालय को नहीं जीत सके। तीन दिन बाद ही हांसी, हिसार और सिरसा की हरियाणा लाईट इंफेंट्री विद्रोहियों से आ मिली और अदालत और जिलाधीश का खजाना जला दिया गया। ये विद्रोह जाटों की अगुवाई और मदद से महम, सांपला और माडोंठी से होता हुआ तब तक दिल्ली पहुंच चुका था।

यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि भगत सिंह, राजगुरू व सुखदेव जैसे वीर शहीदों की शहादत के उपलक्ष्य में अवकाश केवल पंजाब व हरियाणा में ही होता है। राष्ट्र हित में शहीदों का सज़्मान कायम रखने के लिए इनकी शहादत को राष्ट्रीय पर्व के तौर पर राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाना चाहिए। शहीद किसी एक विशेष जाति व वर्ग का नहीं होता वह तो राष्ट्र की धरोहर हैं। शहीद परिवारों के लिए कोई कल्याणकारी योजनाएं नहीं हैं। केंद्रीय व राज्य सरकारों का यह कर्ज़व्य है कि सभी सरकारी व सार्वजनिक योजनाओं में शहीद परिवारों को विशेष आरक्षण दें तो ये न केवल राष्ट्र हित में होगा, बल्कि अपने राष्ट्र के प्रति युवाओं में भी सज़्मान की भावना और ज्यादा गहरी होगी। आज स्वतंत्रता सेनानियों को दी जाने वाली सुविधाएं शहीद परिवार को दिया जाना, समय की मांग है। राष्ट्र की प्रसिद्ध सड़कों, ऐतिहासिक ज़वनों व द्वीपों के नाम शहीदों के नाम पर रखे जाने चाहिएं। देश की आंतरिक सुरक्षा सुदृढ़ बनाने व कायम रखने हेतू रण बांकूरों द्वारा दी गई कुर्बानियों की यादगार में इंडिया गेट की तर्ज पर विजयद्वार व आंतरिक सुरक्षा द्वार संबंधित स्थानों पर बनाए जाने चाहिएँ। शहीदों के सज़्मान के लिए आजादी की लड़ाई के योद्धाओं, सेना और सुरक्षा बलों से तागुक रज़्ते देश पर जान देने वाले सैनिकों के बारे में व्यापक सर्वेक्षण करा कर उनके सही आंकड़े जुटा जहां उन्हें स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा दिया जाना चाहिए, बल्कि उनके परिजनों-परिवारों को तमाम वाजिब सहुलियतें प्रदान की जानी चाहिएं। आजादी की जंग के दौरान अंग्रेजों द्वारा क्रांतिकारियों की छीनी गई भूमि उन्हें लौटाने का काम सरकार को करना चाहिए। शहीदों की कुर्बानियों के इतिहास को फिर से लिखने की सज़्त जरूरत है, ज़्योंकि शोध कर्ताओं ने ये पाया है कि अपने परिवारों की कुर्बानी देने वाले अनेकों वीर आज भी ऐसे हैं जिन्हें इतिहास में जगह नहीं मिल पाई है। ऐसे शहीदों की गौरव-गाथाओं को शिक्षण संस्थानों में हर स्तर पर पाठ्य पुस्तकों के जरिये युवाओं और छात्रों तक पहुंचाया जाना जरूरी है। अंग्रेजों के खिलाफ देश को एकजुट करने में सफल रहे भारत के अंतिम बादशाह बहादुरशाह जफर के अवशेषों और उनसे जुड़ी चीजों को ज़्यांमार के रंगून से भारत ला कर समुचित स्थान पर यादगाार संग्रहालय के तौर पर स्थापित करने की जरूरत है, ताकि युवा वर्ग अपने देश के लिए मर मिटने वालों की यादों को ताजा करता रहे और अजीम शहीद बहादुरशाह जफर को उनकी सर जमीं पर सुकून हासिल हो सके और देश को गौरव और सज़्मान। पंजाब के अजनाला में खूनी कूंए से बरामद हुई शहीदों की 100 से अधिक खोपड़ियां व उनके बहादुरी के तकमें आज भी अपनी व्यक्तिगत पहचान के लिए पुकार रहे हैं जो कि शहीदों की अनेदखी का एक अनोखा उदाहरण है। आज अंग्रेजों को भी याद आ गया है कि प्रथम विश्वयुद्ध में भारतीय सैनिकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी वे 100 वर्ष पूरा होने पर सैनिकों के परिवारों को सज़्मानित करने की योजना बना रहे हैं। देर आए दुरूस्त आए लेकिन भारत सरकार कब चेतेगी।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0(सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं
राज्य चौकसी ज़्यूरौ प्रमुख, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ एवं
अखिल भारतीय शहीद सज़्मान संघर्ष समिति

कष्ट और विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देने वाले श्रेष्ठ गुण है, जो मनुष्य साहस के साथ उन्हें सहन करते है, वही जीवन में विजयी होते है।

भारत का प्रधानमंत्री किसान हो

& lqjtHkku nfg;k

रोटी मनुष्य की पहली आवश्यकता है। शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, राजनीतिक–सभी प्रकार के विकास का रास्ता रोटी की जरूरत पूरी होने पर ही प्रशस्त होता है। हमारे कईं हजार साल के इतिहास में ऐसे कईं रोमांचक प्रसंग हैं जब फसल न होने से राजा ने तपस्या की अथवा स्वयं ही कष्ट उठाया। अतएवं कृषि भारतीय सभ्यता की आत्मा हे और इसका विकास कृषि के इर्द गिर्द घूमता है। पर आज खेती, किसान और खेतिहर मजदूरों की समस्याओं पर सोचने की आदत इस देश में बहुत कम है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सन् 1958 में चेतावनी दी थी कि ''हर क्षेत्र में प्रतीक्षा संभव है, लेकिन कृषि में नहीं'' इसके बावजूद कृषि के क्षेत्र में प्रतिक्षा खत्म नहीं की गई। सामान्य किसान और खेतिहार मजदूर की झोपड़ी में न लक्ष्मी (समृद्धि) पहुंची है और न सरस्वती (शिक्षा)। हाँ, बेकारी उसके दरवाजे पर निरंतर दस्तक दे रही है। स्वंतत्र भारत को किसान के कारण खाद्य क्षेत्र में तीन क्रान्तियों का श्रेय मिल चुका है। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न मन में बार–बार उठता है। कि हरित क्रान्ति (अनाज में आत्म निर्भरता), श्वेत क्रान्ति (दूध में आत्म निर्भरता) और नीली क्रान्ति (मछली पालन में आत्म निर्भरता) का 'अमृत कुम्भ' कौन ले भागा? कहाँ और क्यों अटक गई ग्राम–विकास की हरहराती गंगा?

स्वतंत्रता के बाद सिर्फ एक बार सन् 1965 में पूरे देश ने 'अनाज निज आत्म निर्भरता' और दिल और दिमाग में रेखांकित किया था। लाल बहादुरशास्त्री के आह्वान पर पूरा देश ही किसान बन गया था। 'जय जवान जय किसान' के उद्घोष ने अनाज निर्यातक अमरीका की धौंस को धूल चटा दी थी। आज राजनितिक नेताओं का ऐसा वर्ग अवश्यक है जो गांवों की वोट अपनी झोली में खींचने के लिए तरह तरह के किसान आन्दोलन चला रहे है। सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य पर इन तथा कथित किसान नेताओं का कोलाहल एवं आपस में टकराव जातीय टकराव का रूप लेने लगा है। इससे किसान हितों की क्षति हुई है और राष्ट्रीय स्तर किसान की अवाज उठाने वाला लेना आज कोई नहीं है।

अब तो किसान कि लड़ाई को 'गांव बनाम शहर' के संघर्ष के रूप में टी॰वी॰ पर दिखाया जाने लगा है जबकि लड़ाई तो लुटेरों और कमेरों की है। इस देश में पूंजीपति सत्ता से रिश्ता जोड़कर किसानों का लहू चूसते रहें हैं। काश्तकारों से कौड़ियों के मोल उसकी काश्त खरीद ली जाती है। और धुंआ उगलती चिमनियों वाली इमारतों में पकाकर मोटा मुनाफा कमाया जाता है। अपने हाड – मांस गलाकर खेती करने वाला किसान तो हमेशा सूने आकाश की और ही तकता रहता है।

इतिहास साक्षी है – 'जब हल उठा तो नेता उभरे' सन् 1896 में कोकंण (महाराष्ट्र) में अकाल के समय किसानों के संघर्ष ने लोकमान्य तिलक को लोकप्रिय जननायक बना दिया। सन् 1914 में किसान शोषण के विरूद्ध बुलंद आवाज ने रोहतक में चौ॰ छोटूराम को किसान मसीहा बना दिया। सन् 1918 में खेड़ा किसान आन्दोलन ने गाँधी जी को 'बापू' बना दिया तथा इसी तरह सन् 1928 के बरदोली किसान आन्दोलन ने बल्लभ पटेल जी को 'सरदार' बना दिया। आज किसानों को 'हरी' 'पीली' व 'गुलाबी पगड़ी' पहनाकर किसान हित के नाम पर रैलियाँ तो आयोजित होती रहती हैं पर किसानों का असली रहनुमा तो कोई नहीं दिखाता जो चौ॰ छोटूराम की भाँति एक स्पष्ट नीति अपनाकर भारत में 'किसान राज' लाने का संकल्प ले सके। जब देश की 60 फीसदी जनता खेती बाड़ी से जुड़ी है तो क्यों नहीं लोकतन्त्र की मर्यादा से भारत का प्रधान मंत्री किसान हो? राजनीतिक पार्टियों ने ग्रामीण जनता की उपेक्षा करके प्रधानमंत्री की कुर्सी पर सभ्रंत वर्ग से किसी नेता को बिठाया है। 'वोट हमारे – सरकार उनकी' यह प्रक्रिया असहानीय है।, पीड़ादायक है, इसमें नाइन्साफी है, शोषण है, हक जिसका है, उसे ही मिले, अब किसान किसी का पिछलग्गू नही बनना चाहियें वह अब तक चल रही परिक्रमा में 'बंधुआं' नही बनना पंसद करता। वह परिवर्तन का हामी है, पारदर्शिता उसे भाती है और अब किसान 'औजार' न बनकर अपनी नियति का स्वयं निर्धारण करना चाहता है।

किसान समाज का सबसे ईमानदार, परिश्रम, नैतिक व देशभक्त वर्ग है। खेती सबसे कठिन व्यवसाय है। किसान ने भीषण गर्मी, भीषण सर्दी, भीषण वर्षा और बाढ़ झेली है। उसमें टपलों को खेद–खोद कर जमीन ठीक की है। सांपों के सिर कुचले हैं और अन्न उगाकर देश का पेट भरा है। अब किसानों को भी वही सुविधाएं हो जो और सबको प्राप्त है। आप गामीण वातावरण की समीक्षा किजिये, सुविधाओं की दृष्टि से हमारे गांव प्रचीन सभ्यता के अवशेष प्रतीत होते है। गांधी जी ने चेताया था '' मैं कहूँगा कि यदि गांव नष्ट हुआ तो भारत भी नष्ट हो जायेगा वह भारत नही रहेगा संसार के लिये उसका उद्देश्य, मिशन लुप्त हो जायेगा।''

चार्ल्स मेटकाफ ने भारतीय गांवों का उल्लेख स्वयंपूर्ण लघु गणतंत्रों के रूप में किया था जो प्रायः समयहीन, आत्मनिर्भर और परिवर्तनहीन थे– युद्धों में हारजीत और राजवंशों के उत्थान–पतन से अप्रभावित। पंरतु आजादी के बाद देश जो व्यवस्था बनी एसमें गांवों और कृषि की अनदेखी हुई। नेहरू जी इसे फेबियन समाजवाद और कल्याणकारी राज्य' की चाश्नी में लपेटकर पेश करते थे। गांधीवादी इसका विरोध सामने होकर नहीं करते थे कि कहीं वर्ग–युद्ध न छिड़ जाये। चौ॰ चरणसिंह लाग–लपेट वाले आदमी नहीं थे। इसलिये उन्होंनें किसान–हितों के प्रवक्ता होने का जिम्मा किसी ग्रामीण समाज के वकिल के रूप में नहीं बल्कि देश की सही अर्थ व्यवस्था अपनाने हेतु लिया था। उनका विरोध हुआ और ग्रामीणों की उपेक्षा का सिलसिला तेज हो गया। आजादी के बाद चार–बार औद्योगिक विकास नीति तैयार कि गई, लेकिन कृषि नीति पर आजतक फैसला नहीं हो पाया। स्वामीनाथन आयोग गठित हुआ उन्होंने कृषि व किसान की समृद्धि के लिये ठोस उपाय सुझाव पर उन्हें सरकार क्रियान्वित नहीं कर रही है। क्योंकि पूंजीपति इसके विरूद्ध हैं।

आज राजनीतिक अभिजात ने राजनीतिक सांमजस्य का एक ऐसा चेहरा ओढ़ रखा है जो थोथा प्रगतिशीलता और भीड़ को बहलाने की विश्वव्यापी रणनिति अपना ली है। इसने अंधाधुंध ऐसी आर्थिक कार्यवाईयां की है जिससे आमआदमी व कृषि व्यवस्था पर चरणसिंह व देवगौड़ा जैसे किसान नेताओं को प्रधानमंत्री पद पर नहीं रहने दिया। आज के संदर्भ में बस किसान वर्ग को यह समझना कि वह अपने हितों एवं अस्तित्व की रक्षा कैसे करें? प्रमुख पार्टियों की नीतियां स्पष्ट हैं – वे किसान समुदाय के प्रति कभी भी निष्ठावान नहीं रही उनके प्रधानमंत्री सदैव कॉरपोरेट लॉबी से प्रभावित रहे हैं और भविष्य में भी रहेंगें। भारत एक कृषि प्रधान देश था, आज भी है और भविष्य में भी रहेगा। यदि किसान अपनी राजनीतिक भूमिका स्वयं निर्धारित नहीं करेगा तो वह कॉरपोरेट लॉबी के मातहत हो जायेगा। वोट देहात में है तथा सम्पति शहरों में है जो राजनीति को दिशानिर्देश करती है। इसलिये किसान अपनी जनशक्ति से सत्ता में काबिज होने के प्रयत्नशील रहें और अपने किसान प्रतिनिधियों को लोकसभा में भेज कर प्रधानमंत्री पद पर काबिज हो तथ 'राम राज' अथवा 'किसान राज' का स्वप्न साकार होगा।

मुसिबत बताती है कि हम किस मिट्टी के बने है। – अज्ञात

हरियाणा में उच्चतम आय स्तर-लेकिन व्यापक वित्तीय असमानताऐं क्यों?

Mk- ,l- ,l- lkxoku

हरियाणा में प्रति व्यक्ति आय वर्ष, 2004–05 से भारत के 20 प्रमुख राज्यों में लगातार उच्चतम रही है। इस स्थिति के बावजूद, वित्तीय समावेशन (Financial Inclusion) में हरियाणा राज्य दसवें रैंक पर है। वित्तीय समावेशन का व्यापक अर्थ है लोगों का बैकिंग नेटवर्क से जुड़ना, जोकि कुल मिलाकर प्रगति का सच्चा सूचक माना जाता है। यह कारण बताया गया है कि वित्तीय बाजारों की व्यवस्था के माध्यम से घटित प्रभाव, अनुदान और सब्सिडी से अधिक स्थायी होता है। समावेश वित्तीय प्रणाली की अनुपस्थिति में, गरीब व्यक्ति और लघु उद्यमी, अपने बचत से कोई छोटा काम करने के लिए मजबूर होते है। और जो छोटे यूनिट प्रायः लाभदायक और व्यवहार्य (Viable)नहीं होते हैं। समावेश के महत्व को ध्यान में रखते हुए, पहली बार 2004–05 की रिज़र्व बैंक वार्षिक नीति में इसे एक महत्वपूर्ण मुद्दे के रूप में शामिल किया गया। तदोनुसार, भारतीय रिर्जव बैंक ने अपने खाता खोल गाहक मानदंडों में ढील दी, बिना बैलेंस No frills खातें खोलने के आदेश दिया, बैंक संवाददाताओं की अनुमति दी और 2010–2013 के दौरान विशिष्ट वित्तीय समावेशन योजना के क्रियान्वयन किया। अगस्त 2012 के बाद से (आरबीआई) no frills खाता की बजाय ''बुनियादी बचत बैंक जमा खाता के लिए (BSBDA) खोलने के आदेश दिया है। BSBDA खाता में कोई बैलेंस राशि की आवश्यकता नहीं है, सामान्य जमा की सभी सुविधांए – चेक बुक, एटीएम, इंटरनेट, एसएमएस, सतर्क, आदि प्रदान करता है। यह BSBDA खाता कितनी भी आय वाला खोला जा सकता है और इसे कभी निष्क्रिय नहीं बनाया जा सकता।

इन सभी उपायों के प्रभाव का पता लगाने के लिए, लेखक ने वित्तीय समावेशन की स्थिति की तुलना के लिए सभी राज्यों और कुछ उत्तरी राज्यों के जिलों का एक अध्ययन किया। इस अध्ययन से हरियाणा में वित्तीय समावेशन की प्रमुख विशेषताओं का पता चलता है। रिज़र्व बैंक के जून 2012 के आकड़ों के अनुसार, वयस्कों के बैंक में जमा खाते के मामले में, हरियाणा में संबध (linkage) 107 फीसदी जबकि सभी राज्यों में औसत 86 फीसदी है। लेकिन, हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्रों में वयस्कों के बैंकों का संबध सिर्फ 39 प्रतिशत है जो लगभग पूरे देश की औसत 37 प्रतिशत के बराबर है जिसमें जनजातीय और सुदूर पिछड़े क्षेत्र भी शामिल है। हरियाणा की तुलना में पड़ोसी राज्यों, पंजाब और हिमाचल प्रदेश के ग्रामीण वयस्कों के संबध क्रमशः 50 फीसदी और 74 फीसदी है जबकि सब मिलाकर इन राज्यों में भी 100 प्रतिशत ऊपर वयस्कों बैंकों से जुड़े है। यह तथ्य हरियाणा में अधिक ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच वित्तीय असमानताओं के बारे में बोलते है। इसके अलावा, हरियाणा (दोंनों ग्रामीण और शहरी) में महिला वयस्कों के बैंकों संबंध 53 प्रतिशत है जबकि सभी राज्यों के लिए 42 प्रतिशत और पंजाब में 61 प्रतिशत की है। शाखा सघनता के संदर्भ में, हरियाण में प्रति 2000 वयस्क व्यक्ति 0.45 शाखाएं है जबकि भारतीय रिज़र्व बैंक मानदंड अनुसार मार्च 2012 में 1.00 शाखा घनत्व हिमाचल प्रदेश में 0.55, पंजाब में 0.50 और पूरे देश में सिर्फ 0.32 है। इसमें शाखा से दूर एटीएम भी एक शाखा के 50 प्रतिशत तुलना देकर शाखाओं में शामिल थे। बैंकों के साथ संबंध में सबसे महत्वपूर्ण कारक, एक बैंक की शाखा में ग्राहक की आसान तथा बिना लागत के पहुँच है।

हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्रों में 2000 ग्रामीण वयस्कों के लिए शाखा घनत्व में बस 0.14 है जबकि पूरे देश के ग्रामीण क्षेत्रों में शाखा घनत्व 0.12 है। पड़ोसी राज्य पंजाब के ग्रामीण क्षेत्रों में यह शाखा घनत्व 0.20 और हिमाचल प्रदेश में 0.35 है। अनुभव से, प्रति व्यक्ति आय और वयस्कों के बैंक खातों मं महत्वपूर्ण संबंध पाया गया है, लेकिन यह हरियाणा में पूरी तरह सच नहीं मिला है। हरियाणा में पिछले 8 वर्षों में उच्चतम प्रति व्यक्ति आय के बावजूद ग्रामीण वयस्कों और महिलाओं के बैंक में खाते में कम है तथा जिलेवार असमानता भी अधिक है। इस संबंध मे राज्य भर में जिलावार समावेश की विश्लेषण की आवश्यकता है।

जिलावार, सभी वयस्कों के बेंक संबंध में व्याापक भिन्नता से पता चलता है कि कुल 21 जिलों में बैंक संबंध 136% (यमुनागर) से 293% (गुड़गांव) के बीच में जबकि 6 जिलों अर्थात, कुरूक्षेत्र, करनाल, झझर, महेन्द्रगढ़, पानीपत और सोनीपत में संबंध स्तर 100 से 125% के बीच है। शेष 8 जिलों में बैंक में खाते 100% कम है और ये जिले है – मेवात (37%), पलवल (71%), जींद और कैथल (74%), फतेहाबाद (80%), सिरसा (89%), और हिसार (97%), है। जिला वार–प्रति व्यक्ति आय और वयस्कों के बैंकों में प्रतिशत खातों के बीच सहसंबंध गुणांक 0.74 है। अतः मोटे तौर पर कम विकास स्तर के जिलों में वित्तिय समावेश भी कम है, और उच्च के विकास स्तर के जिलों में अधिक है। बैंक शाखा घनत्व प्रति 2000 वयस्कों की आबादी के लिए, सम्पूर्ण राज्यका औसत 0.45 है। यह शाखा घनत्व गुड़गांव और पंचकूला जिलों में 1.00 से ऊपर है जबकि अन्य 14 जिलों में 1.00 से 0.50 के बीच है तथा यह 5 जिलों में 0.50 कम है अर्थात् मेवात (0.23), पलवल (0.37), महेन्द्रगढ़ (0.41) है। ये ज्यादातर जिले बैंक खातों के द्वारा सम्पर्क में भी कम हैं।

बैंकिंग सेवाएं उपयोग स्तर में अर्थात जमा और ऋण राशि का सफल घरेलू उत्पाद से अनुपात, पूरे हरियाणा में 86 फीसदी है, लेकिन यह पंचकूला में 487 फीसदी और गुड़गांव में 100 फीसदी है। इन दो जिलों में पूरे हरियाणा राज्य की बैंक जमा राशि का 42 फीसदी है और 12 प्रतिशत अकेले फरीदाबाद जिलें में है। यह ध्यान रहना चाहिये कि इसमें पंचकूला निवासियों की चंडीगढ़ बैंकों में और गुड़गांव की दिल्ली में जमा राशि शामिल नहीं है। जिलों के बीच अधिक असमानता के कारण ही हरियाणा राज्य में औसत उच्च प्रति व्यक्ति आय और वित्तिय समावेशन में पूर्ण सकारात्मक संबंध नहीं है। इस संदर्भ में यह स्थानीय कहावत संगत है कि "औसत ज्यौं की त्यौं और कुनबा डूबा क्यों" जिसका अर्थ है, "पूरे परिवार के सदस्यों कि सही औसत ऊंचाई के बावजूद परिवार के कुछ सदस्य एक नदी को पार करते हुए क्यों डूब गए।

पिछड़े जिले मेवात, पलवल, जींद, कैथल, फतेहाबाद, भिवानी, महेन्द्रहढ़, सिरसा और हिसार में न केवल अपेक्षाकृत प्रतिव्यक्ति कम आय है, बल्कि ये जिले राज्य की राजधानी, चंडीगढ़ से दूर भी स्थित है। रिजर्व बैंक से समान निर्देश के बावजूद, इन जिलों से बैंक के निगरानी संस्थाओं जैसे रिज़र्व बैंक और राष्ट्रीय बैंक कृषि और ग्रामीण विकास (नाबार्ड) के कार्यालय भी राज्य के एक कोने में सुदूर स्थान पर स्थित है जिसके कारण वित्तीय समावेशन धीमी गति से हो रहा है। शायद, इस विचार के कारण भारतीय रिजर्व बैंक ने महाराष्ट्र में प्रधान कार्यलय में आरबीआई कार्यालय कानपुर और लखनऊ में है। इसी प्रकार नाबार्ड ने प्रधान कार्यालय मुंबई में होने के बावजूद अलग कार्यालय नागपुर तथा उत्तरप्रदेश में खोला है। हरियाणा के भारतीय रिजर्व बैंक और नाबार्ड के कार्यालय – पंजाब और चंडीगढ़ कार्यालय के साथ संयुक्त हैं। इसलिए, वित्तीय समावेशन के माध्यम से पश्चिमी हरियाणा के अपेक्षाकृत पिछड़ा जिलों के विकास के हित में, रिजर्व बैंक और नाबार्ड अपने शाखा कार्यालय में उपयुक्त केंद्रीय स्थान पर खोलने पर विचार कर सकते हैं।

जाट समाज के विकास की बाधाएं

राकेश सरोहा

15 vxLr 1947 dks Hkkjr vktkn gqvk FkkA vktknh ds i'pkr Hkkjr us dbZ {ks=ksa esa vHkwriwoZ fodkl fd;k gS rFkk Hkkjr vkt ,d vxz.kh fodkl'khy ns'k gSA Hkkjr ds fodkl esa lHkh /keksZa o tkfr;ksa ds ykxksa dk ;ksxnku jgk gS rFkk tkV lekt ds ykxksa us Hkh Hkkjr ds fodkl esa egRoiw.kZ ;ksxnku fn;k gSA vktknh ds i'pkr 66 o"kZ chr tkus ds i'pkr vkt orZeku le; esa tgka lHkh oxksZa ds ykxksa us viuh thou dks orZeku ifjfLFkfr;ksa esa <kydj viuh thou Lrj esa 0;kid lq/kkj fd;k gSA ogha Hkkjr dk tkV lekt og fodkl ugha dj ik;k ftruk fd mls djuk pkfg;s FkkA vU; tkfr;ksa us orZeku ifjfLFkfr;ksa ds lkFk leUo; cSBkdj 0;kikj o rduhdh {ks=ksa rFkk Lojkstxkj ds {ks= esa cgqr fodkl fd;k gSA tcfd bu {ks=ksa esa tkV lekt ds ykxksa dh lQyrk uk ds cjkcj gSA vkt Hkh tkV lekt ds ykxksa dk eq[; :i ls Ñf"k dk;Z ;k ljdkjh ukSdjh ij vk/kkfjr gSA vU; {ks=ksa esa dqN vioknksa dks NksMdj budh lQyrk cgqr de gSA orZeku le; esa tul[;k ds rhoz foLrkj ls tgka tkVksa dh Ñf"k tksr dkQh de gks x;h gS] ogha tkVksa dk ljdkjh lsok esa LFkku cukuk Hkh vklku ugha jg x;k gSA Ñf"k o ukSdjh ds vfrfjDr vU; jkstxkj ds {ks=ksa esa tkV lQyrk D;ksa ugha çkIr dj ik jgs gSA ;g d fopkj.kh; ç;u gS fd bu {ks=ksa esa tkVksa ds lQy u gksus ds D;k dkj.k gS rFkk mudk fuokj.k D;k gks ldrk gSA blls ij tkV lekt dks eFku dh vko';drk gSA vkt ds le; esa tkV lekt ds ykxksa ds fodkl esa dqN eq[; ck/kk,sa fuEu çdkj ls gSa%&

1- tkV lekt dh eq[; leL;k tkVksa esa jktfud o lkekftd ,drk dh deh gSA pkS/kjkgV ds pDdj esa tkV vyx&vyx :i ls cV x;s gS, gSA tkVksa esa ,drk dh deh ds dkj.k viuk gd dh yM+kbZ o l?k"kZ çHkkoh :i ls dj ikus esa vleFkZ jgrs gSA ftlds çHkko ;g gksrk gS fd tkV lekt dh tuLkq[;k vPNh [kklh gksrs gq,, Hkh ;g viuh vf/kdkjksa ls oafpr gSA tkVksa esa ,drk dh deh ds dkj.k gh tkVksa dks dwVuhfr; lsokvksa esa vkj{k.k ds fy, bruk yEck l?k"kZ djuk iM+k gSA tkVksa esa jktfufrd Lrj ij ,drk u gksus ds dkj.k gh fnYyh rFkk jktLFkku ds fo/kkulHkk pqukoksa esa lcls vf/kd tkV tuçfrfu/kh fuokZfpr gksus ds i'pkr Hkh tkV lekt ls lEcfU/kr tuçfrfu/kh bu jkT;ksa dk eq[;ea=h ugha cu ldkA vr% tkV lekt esa ,drk dh deh ds dkj.k vkt tkV lekftd] jktuhfrd rFkk vkfFkZd Lrj ij fodkl ds lEcU/k esa yxkrkj fiNMrk tk jgk gSA tkV lekt dh bl leL;k dks nwj djus ds fy, o tkV 'kfDr esa ,drk o tkxfr ykus ds fy, tkV lekt dks eFkua djuk pkfg, o lHkh tkVksa dks 0;fDrxr fgrksa ds lkFk&lkFk lekt o ns'kfgr ds fy, leku :i ls dk;Z djuk pkfg, o tkV lekt dk uXRo fdlh lqoekU; 0;fDr dks lkSaidj mlls iw.kZ lg;ksx nuk pkfg;s rkfd tkV lekt viuh vfèkdkjksa ds fy, l;qDr :i ls l?k"kZ djds tkVksa ds mRFkku ds fy, çHkkoh :i ls dk;Z dj lds A

2- tkV lekt dh nwljh çeq[k leL;k tkVksa dk vU; tkfr;ksa ds lkFk leUo; LFkkfir uk dj ikuk gS ftlds dkj.k tkVksa dk vU; tkfr;ksa dk lg;ksx çkIr ugha gks ikrk gS cfYd dbZ dk;ksa esa tkVksa dk vU; oxksZ ds fojks/k dk lkeuk djuk iM+rk gSA tksfd tkV lekt ds fodkl esa ,d çeq[k ck/kk gSA ;fn fdlh Hkh 0;fDr ds vU; 0;fDr;ksa ds lkFk lEcU/k fe=rkiw.kZ o lg;ksx ds gSa rks vU; 0;fDr mls 0;fDr dks lg;ksx ugha djxs rks mldk fojks/k Hkh ugha djxs ;g ckr tkV lekt ds ykxksa dks le>kus dh vko';drk gSA dbZ Hkh 0;fDr ;k lektvdsyk pyk dh fufr ij pydj fodkl rFkk lQyrk çkIr ugha dj ldrk gSA thou esa lQyrk ds fy;s lHkh dks ijLij lg;ksx dh vko';drk gksrh gSAblfy;s tkV lekt ds ykxksa dks pkfg;s fd og lekt ds vU; oxksZ ds lkFk lekurk] fe=rk o lg;ksx dh uhfr viuk;s rkfd dbZ Hkh oxZ mudh lQyrk esa ck/kk uk cus vfirq tkV lHkh oxksZ dk viuh lkFk ysdj fodkl dh lQyrk çkIr dj ldsA

3- tkV lekt esa eq[; :i ls Ñf"k dk;Z ij vk/kkfjr gS rFkk tkVksa dks eq[; dk;Z [ksrh ckM+h djds ?kj dk fuokZg djuk gSA orZeku le; esa tul[;k c<us ls tkV ifjokjksa dh [ksrh dh tksr de gksrh tk jgh gS nwljk egxkbZ c<us ls Ñf"k dk;Z dh ykxr Hkh dkQh x<+ x;h gS blls çdkj ,d ifjokj dk [ksrh dk dk;Z djds ?kj pykuk o cPpksa dks vPNh f'k{k fnyokuk dkQh dfBu gksrk tk jgk gSA ftlds ifj.kke Lo:i tkV lekt vkfFkZd rFkk fodkl ds Lrj ij fiNMrk tk jgk gS rFkk cPpksa dhmfpr f'k{kk ds vHkko esa tkV ;qod cjkstxkjh dk lkeuk dj jgs gSA bl leL;k dks nwj djus ds fy, tkVksa dks Ñf"k ds vfrfjDr vU; jkstxkj iw.kZ dk;ksa dks viukuk pkfg;s rFkk cPpksa o ;qodksa dks rduhdh cjkstxkj

विपदा हूं भली, जो थोर दिन होय। हित-अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय – रहीम

d: dk;Z djus d: fy, çfjr djuk pkfg;A

4- tkV lekt d: ;qok Ñf"k d: i'pkr ljdkjh lsok e: vkus dh rjQ T;knk ç;Ru djr: g: ijUrq tuls[;k rFkk f'k{k e: foLrkj gksus d: i'pkr tkV ;qokvksa d: fy, ljdkjh lsok e: p;fur gksuk vc dkQh eqf'dy gks x;k g: ft ldk ifj.kke ;g g: fd vkt tkV lekt d: ;qok cjkstxkjh dk lkeuk dj jg: g: ftld: dkj.k o: vfFkZd rFkk ekufld Lrj ij ruko dk lkeuk djus dkj.k ifjokj] lekt o ns'k d: fodkl e: i.kZ ;ksxnku ugha ns ik jg: gSA blfy;: tkV lekt dks pkfg;: fd og viu: cPpksa dk jkstxkj i.kZ rduhdh f'k{kk fnyok;: rkfd cPp: cM: gksdj viu: Lrj ij viu: ijks ij [kM: gks ld: rFkk Lojkstxkj dk dk;Z djd: viu: ifjokj dk lkekftd rFkk vkfFkZd Lrj ij fodkl dj ld:A

5- tkV lekt d: vkfFkZd Lrj ij fodkl u dj iku: dh ,d e[; leL;k tkVksa dk O;kikfjd dk;ksZa e: lQy uk gks ikuk gSA dN vioknksa dk NksM+dj vf/kdka'k tkV O;kikj d: O;olk; e: vlQy jgr: gSA bldk çeq[k dkj.k tkVksa e: O;ogkj d: 'kyrk] foueerk rFkk O;kikfjd uhfr;ksa dk vHkko g: ftld: dkj.k o: O;kikj dh ckfjdh;ksa dk le>k ugha ikr: g: rFkk yEc: le; rd O;kikj dk O;olk; ugha dj ikr: g: ftld: ifj.kke Lo:i tkVksa d: fy;: jkstxkj d: volj lhfer gksdj dj jg x;: g: rFkk tkV vkfFkZd Lrj ij fodkl u dj iku: d: dkj.k fiNM+rk tk jgk gSA O;kikj e: lQyrk çkIr djus d: fy;: vko';d g: fd tkV viu: O;ogkj rFkk ckypky e: d'kyrk] foueerk o e/kj Hkk"kk d: x.kksa dk lekos'k dj: o O;kikj dh ckfjdh;ksa fl[kus d: fy, lEcfU/kr O;kikj tkudkjksa d: ikl ukSdjh djd: mul: O;kikj pykus dh uhfr;ksa o fl)kUrksa dk Kku çkIr dj: o O;ikj e: lQyrk çkIr djd: viu: ifjokj] lekt o ns'k d: vkfFkZd fodkl dh cfu;kn cuA

6- tkV lektdh ,d vkj çeq[k leL;k orZeku e: ijkus fjrh fjoktksa rFkk :f<oknh fopkjksa ls c/ks jgus dh Hkh g: tkV lekt d: dbZ fjrh fjokt orZeku le; e: viuh mi;ksfxrk o çlfxdrk [ks pqd: g: ijUrq tkV lekt vkt Hkh lekt dh 'ke: o fn[kkos d: dkj.k bu fjrhfjoktksa dk ikyu djrk vk jgk gSA ftuesa ls dbZ çeq[k fjrh fjokt ;: gSA tkV lekt d: vf/kdka'k ifjokjksa e: vkt Hkh eR;q Hkkt rFkk eR;q ij yu&nu dk fjokt dk;e g: tkfd ,d cgqr cM+h lkekftd dqjhfr gSA bl cqjkbZ ij rRdky çHkko ls lkekftd Lrj ij çfrcU/k yxuk pkfg;] tkV lekt dks eR;q dh 'kksd

vof/k dks Hkh de djd: 5 fnu ;k 7 fnu dk djuk pkfg;] tkV lekt dks ngst çFkk dks lekIr djd: fookg [kpZ dks vR;Ur lhfer djuk pkfg;] NksVd e: fn;: tku: okys vkHkw"k.kks ;k :i;ksa ij çfrcU/k yxkuk pkfg;] tkV ifjokjksa dks fdlh Hkh ikfjokfjd lekjksg e: efnjk iku ij çfrcU/k yxkuk pkfg,] tkV lekt dks lottfud Lrj ij [kyh tku: okyh rk'k ij çfrcU/k yxkuk pkfg;] D;ksfd rk'k [kyu: okyk ,d rks le; dh cckZnh djrk g: nlljk /khjs&/khj: ;g yr tqvk [kyu: dh yr e: ifjofrZr gks tkrh g: rFkk ykxks d: /ku o le; dks cckZn dj nrh gSA blfy;: tkV lekt dks pkfg;: fd orZeku le; d: vuq:i ijkus fjrh fjoktks e: l'kks/ku o l/kkj dj: rFkk lkekftd djhfr;ksa ij rRdky çfrcU/k yxk;: rkfd leLr ejou lekt e: tkVksa dh Nfo lq/k; rFkk fodkl'khy lekt dh cu ld: tkfd tkV lekt d: fodkl d: fy;: vfr vko';d gSA

7- tkV let d: fodkl d: fy, vko';d g: fd og cg] cfV;ksa rFkk ukfj;ksa d: çfr viuh lkp e: fodkl'khy ifjorZu yk;: rFkk mUgs vf/kd lEeku ns o jkstxkj d: fy, LorU=rk çnku djA tkV vih cfV;ksa dks vPNh f'k{kk fnyoku: e: dksbZ deh u NksM: D;ksfd ,d f'kf{kr ukjh viu: ifjokj rFkk Hkkoh ih<h dk lLdkjh cuku: e: o mudh fodkl'khy lkp cuuk e: çHkkodkjh <x ls ;ksxnku ns ldrh g: blfy;: tkV ifjokjksa dks pkfg;: fd og viuh cfV;ksa dks i.kZ f'k{kk fnyoku: rFkk jkstxkj djus d: fy;: mUgs vf/kd LorU=rk çnku dj: bld: lkFk&lkFk ;qofr;ksa dks Hkh pkfg;: fd og ijh egur ls f'k{kk çkIr djd: viu: ifjokj dk xkjo c<k;: rkfd dksbZ ,sls vkpj.k uk dj: ftl ls ifjokj dk lekt d: lkeu: 'kfeUnk gksuk iMsA D;ksfd tkV lekt d: fojkfèk;ksa }kjk vkuj fdyhx d: lcls vf/kd vkjksi tkVksa ij yxk;: tkr: g: tkfd tkV lekt dh Nfo dks /kfey djr: g: rFkk tkV lekt d: fodkl dks vo:) djr: g: blfy;: tkVksa dks pkfg;: fd ,sls çdj.kksa e: dkuu dks viu: gkFk e: uk yo: rFkk ufrd vkpj.k d: nkf"k;ksa dk lkekftd cfg"dkj djsA

bl çdkj tkV lekt ;fn viu: lekt e: ikbZ tku: okyh lkeftd] dqjhfr;ksa ij çfrcU/k yxkdj viu: thou e: O;ogkj e: d'kyrk] foueerk] e/kjHkk"kk] rduhdh Kku] O;kikfjd uhfr;ks] vU; oxksZ d: lkFk leUo;] cPpksa dks vPNh f'k{kk fnyoku] ukfj;ksa d: çfr ldkjkRed lkp d: x.kksa dk leko'k dj yrk g: rks ,slk dksbZ dkj.k ugh g: fd tkV lekt lkekftd] vkfFkZd rFkk jktuhfrd fodkl dk çkIr uk dj ld: rFkk ns'k d: fodkl e: egRoi.kZ ;ksxnku nus dk vf/kdkjh uk cuA

घर के कोने और माता के अंचल में बड़ा अन्तर है। एक शीतल जल का संसार और दूसरा मरूभूमि – प्रेमचंद

List of Donors of Jat Sabha Chandigarh

Sh. R. S. Malik, IAS (Rtd.), Valley Estate, Near Railway Crossing, Mata Mansa Devi Road, Pkl	11000.00
Sh. Chand Ram Dahiya, # 1877, Sector 19, Faridabad.	11000.00
Sh. Sukhbir Singh Gill, # 976, Sector 9, Karnal	5100.00
Sh. Jagbir Singh, Flat No. 501-A, GH 3, Sec. 17, Pkl	5100.00
Sh. Hanuman Singh, # 368, Sector 16-A, Faridabad.	5100.00
Sh. Rajesh Sheoran, #S-283, Army Flats, Sector4, MDC, Pkl	5100.00
Sh. D. S. Sihag, # 1507, Sector 21, Pkl	8200.00
Smt. Urmil Sihag, # 1507, Sector 21, Pkl	5100.00
Sh. Sidhant Sihag, # 1507, Sector 21, Pkl	5100.00
Sh. Surendar Singh Chhikara, # 319, Sector 15, Sonepat	5100.00
Smt. Nirmla Chhikara, # 319, Sector 15, Sonepat	5100.00
Sh. Nikhil Chhikara, # 319, Sector 15, Sonepat	5100.00
Dr. Priyanka D/o Sh. Surendar Singh, #849, Sector-1, Rohtak	5100.00
Dr. Satpal Singh S/o Sh. Raj Singh, VPO: Makrouli Khurd, Distt. Rohtak	5100.00
Dr. Manisha, W/o Sh. Satpal Singh VPO: Makrouli Khurd, Distt. Rohtak	5100.00
Smt. Anu, W/o Sh. Ravinder Singh E7-A/9, Krishna Nagar, New Delhi	5100.00
Sh. Viman S/o Sh. Ravinder Singh, E7-A/9, Krishna Nagar, New Delhi	5100.00
Sh. Subhash Sehrawat, 309/5, Adarsh Nagar, Gohana, Distt. Sonepat	5100.00
Smt. Satya Sehrawat, 309/5, Adarsh Nagar, Gohana, Distt. Sonepat	5100.00
Sh. Ashuman S/o Sh. Surendar Singh #849, Sector 1, Rohtak	5100.00
Sh. Narendar Kumar S/o Sh. Satbir Singh #806/34, Vijay Nagar, Rohtak	5100.00
Sh. Rajesh Kumar S/o Sh. Raj Singh VPO: Makrouli Khurd, Distt. Rohtak	5100.00
Sh. Sachin Kumar Dalal # 1070, Gali No. 4, Bahadurgarh, Distt. Jhajjar	5100.00
Sh. Devendar Singh, # 806/34, Vijay Nagar, Rohtak	5100.00
Sh. Naresh Kumar S/o Sh. Balwan Singh VPO: Bhalaut, Distt. Rohtak	5100.00
Sh. Sat Narain S/o Sh. Hari Kishan, VPO: Ahirka, Distt. Jind	1100.00

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl 26/5'1" BA, JBT Working as Restorer in Punjab & Haryana High Court Chandigarh.Avoid Gotras: Dagar, Dalal, Suhag Cont.: 09812639204
- SM4 Jat Girl 27/5'5" Geologist/Scientist, M.Sc. Geology from Kurukshetra University.Working as Class-I Officer in Central Govt. at G.S.I. Dehradun. Avoid Gotras: Kundu, Malik, Rathee Cont.: 08950092430, 09416934251 E. mail: ramkk9253348652@gmail.com
- SM4 BDS Jat Girl 32/5'5" (divorced just after 2 months with mutual consent) .Employed as Dental Surgeon (Class-I Officer) in Haryana Govt. Avoid Gotras: Malik, Mann Cont.: 09417383946, 0172-2556818
- SM4 Jat Girl 23/5'2" B.Tech (CSE) Doing MA (English) Avoid Gotra: Malik, Hooda, Joon Cont.: 09780336094
- SM4 Jat Girl 26/5'5" B.Tech. Doing M. Tech.Avoid Gotra: Pawaria, Nandal, Ahlawat Cont.: 09811658557, 09289822077
- SM4 Jat Girl 23/5'3" B.Tech final year.Avoid Gotra: Pawaria, Nandal, Ahlawat Cont.: 09811658557, 09289822077
- SM4 Jat Girl 28/5'3" Double MA & B.Ed. J.B.T Employed as JBT Teacher in Haryana Government since 2011. Avoid Gotras: Dhull, Goyat, BhalCont.: 09467671451
- SM4 Jat Girl 25.6/5'2" B.Sc. Computer Science, MBA Employed as Probationary Officer in Nationalized Bank at Kurukshetra. Avoid Gotras: Kaindal, Nain, SaharanCont.: 09466066599
- SM4 Jat Girl 24/5'6" M.Com, G.A.R.F. H.Tet. B.Ed. Avoid Gotras: Gehlawat, Gill, DangiCont.: 09466124612
- SM4 Jat Girl 27.6/5'4" M.A.(English), B.Ed. Employed as Female Supervisor in Women & Child Department, Haryana. Avoid Gotras: Dangi, Sangwan, Pilania Cont.: 09915012369
- SM4 Jat Girl 24.6/5'6" M.Sc. Microbiology, B.Ed. Employed in a reputed Lab at Panchkula. Avoid Gotras: Lather, Malik, Kundu Cont.: 09780938830
- SM4 Jat Boy 33/5'11" M.A, M.Sc., H.D.S.E., Employed as Software Manager in ICICI Bank Insurance Sector DelhiWith 7 Lac Annual & Bonus, Health Insurance benefits. Avoid Gotras: Tomar, Khewal Cont.: 09729440347

Jat Sabha Chandigarh (Regd.)

ऑनर किलिंग बनाम खाप पंचायत

& pk- duly egj flg nfg;k

सम्मान संग जुडा मारणा, कैसा वक्त आया।
खाप पर क्यों लगी सै तोहमत, जिसने सदा बचाया।।

धुम्मे संग सदा आग मिलै, यो बड्डे कहते आये,
पर निज स्वार्थ तांही ठावैं मुद्दा, जन वो खास कहवाये,
प्रजा हो या निजाम दरबारी, गावणिया गेल बताये,
सोच जिनकी हो पाक—साफ, नहीं राह भटके कदे सुहाये,
राई तैं कुछ नै पहाड़ बनाये, और अपणा स्वार्थ बढ़ाया।।
सम्मान संग जुडा मारणा ....।।

रंडवे का छौरा बिगडः, और रांड बीर का छौरा,
दगा करः, कन्नी काटः, दे कः ओरा—मोरा,
उकसाणिया भी हुए जग मैं,
ना हर कोई पाक—साफ और कोरा,
तरह—तरह के लोग लुगाई, सब का अपणा टोरा,
के काला—पीला, के गोरा, सब को ग्रस्त बताया,
सम्मान संग जुडा मारणा........................।।

कामदेव जब हो अगाड़ी, राह नई दिखावैगा,
याणी उमर जोखम ठाण का जज्बा, रूप नया लावैगा,
भकाणिया करः उल्लू सीधा, तोते गेल उड़ावैगा,
कालखः ज हो गैर के मुंह पः, रंग चोखा आवेगा,
पैसा जरूर असर दिखावगा, जो सदा ही होता आया,
सम्मान संग जुडा मारणा........................।।

हर पीढ़ी गेल जनरेशन गैप बढा,
कुछ तः करणा चाहिये,
संविधान की ना हो हाणी, मानवता जरूर बचाईये,
दोनों पीढ़ियों की हो सुणवाई, ना एक की बात बढ़ाईये,
मां—बाप, औलाद अलग—अलग नहीं,
या भी जरूर बताईये, खाप को क्यों बीच मैं लाईये,
असल मुद्दा और बताया।
सम्मान संग जुडा मारणा........................।।

काम वासना नहीं आपे मैं माडी, पर संयम होणा चाहिये,
नगर खेड़े की हर नार को, मतना अपनी बीर बणाईये,
आदि काल के शादी के रिश्ते को मतना कालख लाईये,
धर्म—अर्थ हो पहलम, पिफर काम नै शान्त कराईये,
रीति—रिवाज का ना दोश बताईये, जै कामदेव नै घेरा पाया,
सम्मान संग जुडा मारणा ....।।

ब्रह्मचर्य नः क्यों भूले, जिसने जीवन का पहला चरण बतावैं,
अश्लीलता आज हुई शिखर पै, मोबाईल इंटरनेट खूब दिखावैं,
मां—बाप के संस्कार भूलगे कामदेव पै फूल चढ़ावैं,
आज की युवा पीढ़ी क्यों तगाजे तैं हम बिस्तर होणा चाहवैं,
बिन ब्याही आज गर्भ ठहरावैं, व्यर्था नूर गंवाया।
सम्मान संग जुडा मारणा........................।।

मनोज—बबली नैं तुम फिरों गांवते,
नवीन—सोनम की करो बात नहीं,
धी बेटी क्यों बणी नार कंसनी, भूली क्या गलत क्या सही,
कबूलपुर मैं नरसंहार हुआ, कामदेव की बात रही,
सात जीव बलि चढ़े, क्यों या बात व्यर्थ गई,
आओ सब करैं गलत नैं सही, ईब ओड आखरी आया,
सम्मान संग जुडा मारणा........................।।

कर्नल मेहर सिंह कह, तुम स्प ट करो, के सै मंशा थारी,
कः तै यू मसला खास सै, या कामदेव की त बिमारी,
कः एनजीओ का ध्न हावी होग्या,
कः व्यवस्था ही खुद हारी,
कः संवाद आपस का जड तै खोग्या, सब नै चुप्पी मारी,
क्यों शिखर हो चले अहम, खुद्दारी,
जिन डेरा बीच मैं लाया।
सम्मान संग जुडा मारणा........................।।

हमें जिन पर गर्व है

जाट सभा चंडीगढ़ के आजीवन सदस्य श्री जोरा सिंह देशवाल के सुपुत्र मेजर विशाल देशवाल को सेवादिवस 2014 के अवसर पर कुपवाड़ा सैक्टर में उनके द्वारा उत्कृष्ट अगवाई करने पर जी.ओ.सी.इन.सी, उत्तरी कमाण्ड प्रशंसा पत्र से सम्मानित किया गया। जाट सभा चण्डीगढ़ उनकी इस शानदार सफलता पर हार्दिक बधाई देकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना करती है ।

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह—सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2—बी, सैक्टर 27—ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172—2654932 फैक्स : 0172—2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172—2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2—बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27—ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया ।